दिन ः १

झुठी जीभ ः भाग १

नितीवचन १२ ः२२

झुठ बोलने से हमारे, परमेश्वर और दुसरो से संबंध बिघड जाते है. झुठ हमे असुरक्षित बनाता है.हम आत्मविश्वास खोते है.झुठ बोलनेवाले जीभ से परमेश्वर घृना करते है.झुठ बोलने के अनेक प्रकार है जैसे धोखा , आधा सच , नमक मिर्च लगाकर बोलना और झुठी प्रशंसा.

कपट

१ पतरस ३ ः १०

पतरस हमे यह चेतावनी देता है कि कपट हमारे जीवन को दुखी बनाता है और हमारे अच्छे दिन कम करता है.याद किजीए , याकुब ने एसाव के साथ किया.अपने भाई एसाव का पहलौटे का हक्क पाने के लिए अपने मा के साथ मिलके अपने पिता को धोखा दिया.अपने भाई एसाव के जैसा भेस बनाके याकोबने अपने पिता इसहाक से आषिश ले लिया.जब एसाव को यह पता चला तो वो कोधित हुआ और कडवाहट उत्पन्न हुई.वो एसाव को मारना चाहता था.याकोब को दूर देश को अपने मामा के पास जाना पडा.और आगे हम देखते है कि उसके मामा उसे कईबार धोखा दिया.जीवन बहुत दुखी था और अच्छे दिन ज्यादा नही रहे.

भजनसंहिता ५५ ः २३

कोनसी बात आपको कपटी बनाती है ? अगर हमने परमेश्वर पर भरोसा नही रखा तो हम कपटी हो जांएंगे.कपट करना मतलब परमेश्वर को लाफा मारना.

आधा सच....इमानदार ये शब्द गणित के पूर्तता इस शब्द से लिया गया है इसका अर्थ है कोइ भी पूरा अंक, न की उस अंक का कुछ भाग. इमानदारी मतलब थोडा या आधा नही बल्की पूरा सच बोलना.

अगर हम स्कूल या ऑफिस से देर से आते है तो हमारे इमानदारी की परीक्षा होती है.मै चाबी ढुंढ रहाता, बस या रिक्षा देर से आइ, बहोत भीड थी... या घर देर आते है मै दोस्तो के साथ था, विशेष क्लास था...हम खुदको यह भरोसा देते है कि अगर हम आधा सच बोलते है तो हम सही होते है.इसका अर्थ यहा यह भी है कि हमारी गलतिया हम दुसरो पर डालते है.

अयुब २७ ः ५...हम “सच , पूरा सच और सच के सिवाय कुछ न कहे” यह एक बडी बात है.

ीदन ः २.........झुठी जीभ ः भाग २

नमक मिर्च लगाकर बात करना

दुसरोंका ध्यान खिंचने लिए किसी बात को नमक मिर्च लगाकर बताना एक आम बात है. यह बात नुकसान करनेवाली नही ऐसा लगता लेकीन वो भी एक झुठ है. इस तरह से बात करनेवाला व्यक्ती अपना सम्मान गवांता है और उस पर कोई भरोसा नही करता. "भेडीया आया रे आया" ऐसा झुट बोलनेवाले लडके की कहानी अपने सुनी होंगी. जब सच में भेडीया आया तो किसीने उसपर विश्वास नही किया.

प्रकाशितवाक्य २१ ः ८

इस तरह झुट बोलने कि चाह हमे हो सकती है लेकिन परमेश्वर ने ऐसे सब लोगो का क्या होगा यह बताया है.

नितीवचन ८ ः ७ से ८

झुठी प्रशंसा करना

किसी भी बात को बडा बनाकर बताना आपने आप से संबंधीत होता है लेकिन झुठी प्रशंसा करना दुसरो से संबंधीत होता है.

यहुदा १ ः १८

झुठी प्रशंसा करना मतलब दुसरो कि पसंदी प्राप्त करना. दुसरो की योग्यताा न हो ते हुए उनकी झुठी तारीफ करना.

भजनसंहिता ५ ः १२

परमेश्वर कि संतान ने इस तरह नही करना चाहिए. परमेश्वरने एस्तेर को पसंद किया और वह परशिया की रानी बन गयी. परमेश्वरने दानिएल को पसंद किया और अशुध्द खाना न खााने के लिए उसको अधिकारीयो से अनुमती मिली.

परमेश्वरने युसुफ को पसंद किया और फारो के बराबर वह देश का प्रमुख बना. परमेश्वर कि संतान अपनी युक्तीया नही चलाता बल्की परमेश्वर पर भरोसा रखता है.

याद रखीए कि आप केवल कुछ साधारण लोगो कि ही झुठी प्रशंसा कर सकते है. जो लोग खुद को जानते है आप उनकी झुठी प्रशंसा नही कर सकते.

झुठी प्रशंसा हममे नकारात्मक भावना को जन्म देती है. जब हमे लगताा है कि हमारी ओर किसी का धान नही , हमारी कोई कदर नही करता या हमारी तरफ कोई आकर्षित नही या शैतान द्वारा अगर कोई नकारात्मक भावना हमारे अंदर होती है तो झुठी प्रशंसा हमारे जीवन में प्रवेश करती है. दुसरोके साथ भी यही होता है. जो भावना मे मजबूत होते है वो केवल सच्ची प्रशंसा ही कबूल करते है.

याद रखीए कि लोग अपनी गलतीया छुपाने के लिए , अपनी हार पर पर्दा डालने के लिए और कुछ लाभ उठाने के लिए झुठी प्रशंसा का उपयोग करते है.

भजनसंहिता १२ ः ३

अय्युब ३२ ः २१ से २२

<u>दिन ः ३ . . . .</u>चालाक जीभ

न्यानियो १६ ः १५

शिमशोन परमेश्वर का चुना हुआ व्यक्ती था . वह एक वीर योध्दा था . पलिश्ती लोगो के क्रुरता से इस्त्राएल लोगो बचाने के लिए परमेश्वर ने उसे चुना था . परमेश्वर ने शिमशोन को अदभूत शारीरीक सामर्थ्य और बल दिया था . उसके लंबे बालो में उसके शक्ती का रहस्य था . शिमशोन के विनाश की शुरूवात तब हुई जब वह दलीला नामक कपटी और धुर्त स्त्री की मोह में पडा . अनेक झुठ बोलकर उसने शिमशोन के शक्ती का राज जान लिया . उसने उसके बाल कटवाकर परमेंश्वर से मिली हुई शक्ती उससे छिन ली .

चालाक होना मतलब कपटसे जुबान का इस्तेमाल करना . उसका असर बडा होता है . याद रखीए कि किस प्रकार शैताान ने अपने कपटी शब्दोसे हवा को आज्ञा तोडने के लिए मजबूर किया . चालाक लोग हरबार अपनी सफलता पे खुश होते है लेकिन अंत मे अपनी सारी इज्जत गवांते है . जो लोग अपनी कपटी बातो से येशू को रोमियो राज्य के खिलाफ भडका रहै थे . येशूने उनका विरोध किया . उन्होने येशूकी की खुब प्रशंसा की और अंत में पुछा कि क्या कैसर को कर देना शास्त्र के अनुसार सही है या गलत है ?(**लुका २० ः २२ से २३**) . “येशूने उनसे पुछा आप मेरी परीक्षा क्यों लेते है”? उसने अपने ज्ञान से उनके कपटी स्वभाव को ल्ज्जीत किया .

हमने यह कभी नही पढा कि यीशू कपटी थे . मौत का सामना करते हुए भी उन्होने कभी ऐसा नही किया . परमेश्वर कि संतान होने के नाते आइए हम ऐसा संकल्प करे की न हम कभी ऐसा बर्ताव न करेंगे और न ऐसा बर्ताव सहन करेंगे .

दिन ः ४ . . . . .उतावली जीभ

नितीवचन २९ ः२०

क्या कभी आपके साथ ऐसा हुआ है कि आपने बिना सोचे कुछ बात की और बादमें आपको पछातावा हुआ? हम कितने भी निर्दोष हो लेकीन इस तरह बात करके हम दुसरो को चोट पहुचांते है .

याकुब ३ ः २

चिंता दूर करने के लिए शायद आप कोई मजाक करते है . किसीका दुख दूर करने के लिए शायद आप कोई चुटकुला सुनाते है लेकीन हो सकता उसे और भी दुखी करते है .

नितीवचन १८ ः १३

सामने वाले व्यक्ती की बात खत्म होने से पहले क्या आप उत्तर देकर मुख्य बात को बाजू मे रखते है ?

सभोपदेशक ५ ः २

सूलैमान हमे प्रभू के खिलाफ उतावली बात न करने कि चेतावनी देता है. जल्दी कुछ भी बात करके बादमें वो मेरी गलती थी ऐसा कहकर हम उसे नजरअंदाज नही कर सकते.

हमे पता है कि यिप्तह ने परमेश्वर के सामने उतावला होकर मन्नत मानी. **(न्यायियो ११ ः ३० से ४०)**

कई बार हमारे शब्द हमे बादमे निगलने पडते है इसलिए पहले से ही मिठे शब्द का उपयोग करे "रूकीए .सोचिए और बोलने से पहले प्रार्थना किजीए". तो आप गलती करने से बचेंगे.

याकुब १ ः १९

इसलिए शायद परमेश्वर ने हमे दो कान और एक मुंह दिया है.

शब्द समय के जैसे होते है जो एकबार जाने से वापस नही आते. एकबार मुह से शब्द निकाले तो वापस नही ले सकते. इसलिए बोलने से पहले अपने शब्दो के बारेमें सोचिए.

दिन ः ५ . . . . .फुट डालनेवाली जीभ

मत्ती ५ः ९

झगडा लगाके राज्य करने का शैतान का इसांन के खिलाफ एक असरदार हत्यार है. अपना परिवार हो या कलिसिया हो झगडे या फुट के कारण दो या अधिक लोगोने कि हुई मेहनत बेकार हो सकती है. शैतान को पता है कि अगर दो जन एक मन हो तो वे असरदार कार्य कर सकते है **(मत्ती १८ ः १९)** . यह दुख की बात है कि कुछ लोग शांती तोडनेवाले होते है. सवाल यह है कि क्या आप भी ऐसे ही है ?

नितीवचन ६ ः १९

यह वचन बताता है कि सात बातें है जिनसे परमेश्वर घृणा करते है. उनमे से एक है ऐसा मनुष्य जो भाइयो में बैर डालता है.

इफिसियो ४ ः ३

पवित्र आत्मा कि एकता से आपस में शांती रखने की बिनती पौलस करते है. शांती लाने के लिए बहुत मेहनत, नम्रता और धार्मिकता आवश्यक है. शांती के लिए स्पष्टता की जरूरत है.

गुप्त बातें सामने लाने से स्पष्टता आती है . बातें गुप्त रखने से स्पष्टता नही होती . पापो के खिलाफ नजरअंदाज न करते हुए अगर कोई भी बात सामने लाने से स्पष्ट होती है . पाप के बारें मे वचन की सच्चाई बतानेसे भलेही कुछ समय के लिए तणाव होता है लेकीन उससे शांती ओर एकता रहती है .

स्पष्टता का मतलब है आपके संदेह, डर और चिंताओ को प्रकट करना . ऐसी कल्पना करना या सोचना गलत है कि सामनेवाले व्यक्ती को सब पता है "मैने बिना बताए सारे लोगो ने मुझे समजके लेना चाहिए" मतलब घमंड है . इसमे स्पष्टता नही होती .

याद रखीए भावनाए कुछ पल के लिए होती है . वह ज्यादा देर नही रहती . परंतु ऐसी भावनाओ को अगर आपने प्रकट नही किया तो ये भावनाए आपके जीवन मे हमेशा के लिए घर करेंगे .

मत भूलीए कि प्रभू ने हमे **इब्रानी १२ ः १५** मे कैसे सावधान किया है .

दिन ः ६ . . . . विवाद या बहस करनेवाली जीभ

नितीवचन २० ः ३

झगडा लगाने वाले लोगो को एकता को तोडना अच्छा लगता है . जब की विवाद करनेवालो को दुसरो को नीचा दिखाना अच्छा लगता है . विवाद करना मतलब जीभ का गलत उपयोग करना और लोगो को जीतने का या उनके उपर प्रभाव डालने का सही मार्ग नही है . जब हम विवाद करते है तो हम सिख नही सकते है . हमे बदलने का और आगे बढने का मौका नही मिलता .

ध्यान से सुनने से, चर्चा करके और सिखने से हम अधिक अच्छे बन सकते है न कि वादविवाद करने से .

कुछ लोगो को लगता है की विवाद करने से उनकी किमत और बढती है . एक झगडालु व्यक्ती का काम है सामनेवाले के साथ न रूकते हुए विवाद करते रहना . विवाद करके किसीको कुछ हासिल नही होता .

नितीवचन १७ ः १४

सुलैमान राजाकी सलाह की ओर ध्यान दिजिए . .

झगडालु व्यक्तीको उत्तर देने का और एक मार्ग है कि उसको कहना " ठीक है . यह आपकी राय है" .

मत्ती ५ ः२५

जिनके साथ आपका विवाद है उनके साथ मिलाप करने को यीशू ने बताया है . परमेश्वर की संतान होने नाते अगर हम किसी बात में असहमत है तो वो बिना विवाद के बतानेको सिखाना चाहिए . जब उध्दार की बात हो हमने कोई भी आविश्वासीयोसे

सहमत नही होना है.हमने संकल्प के साथ कोमलताा से बात करना है.

बेंजामीन फ्रंकलीन कहते थे “इस बात पर मै सहमत हू .लेकिन अगर अपको कोई ऐतराज न हो तो क्या इस बात को मै अपवाद मान लू?

दिन ः ७ . . . . .घमंड करनेवाली जीभ.

घमंड तब आता है जब हम परमेश्वर को भुलते है.हम सोचते है कि सबकुछ हमारा है और हम ने अपनी योग्यता से उसे कमाया है.

नबूकदनेस्सर राजा ने यही किया.एक दिन जब वह अपने राजभवन के छत पर टहल रहा था तो उसने अपने आप से यही कहा और उसमें घमंड आया (**दानिएल ४ ः ३०**) . परमेश्वरने तुरंत कार्य किया और उसे राजपद से निकाला गया.वह खेतो में बैलो के नाइ घास खाने लगा ,उसके बाल उकाब पक्षीयों से और उसके नाखून चिडियौ के छांगुलो के समान बढे.परमेश्वरही सब पर राज्य करता है इसका एहसास जब उसे हुआ तो परमेश्वर उसे वापस उसकी पहले की महिमा और राज्य दिया.यह **दानिएल ४ ः ३४ से ३५** मे बताया है.घमंडीयों का परिणाम क्या होता है अगर हम यह पवित्र शास्त्र में पढे तो हमे नम्र होने मे मदत मिलेगी.प्रेरित पौलुस के वाक्य देखिए “क्योंकी तुझमें और दूसरे में कौन भेद करता है ? और तेरे पास क्या है जो तूने नही पाया : और जब की तूने पाया है .तो ऐसा घमंड क्यों करता है कि मानो नही पाया (**१ ले करिंथ ४ ः ७**).

परमेश्वर उसकी महिमा के लिए ही हमे अलग अलग गुण दिए है.याद रखीए प्रशंसा एक अत्तर के समान होती है .जिसका आप थोडा ही उपयोग कर सकते है .अगर उसे पि लिया तो आप की मौत भी हो सकती है.

१ले करिंथ १५ ः १०

दिन ः ८ . . . . .खुदको पसंद न वाली जीभ.

निर्गम ४ ः १०

जब आप खुदको नापसंद करते है तो अनुचित तरीके से अपना मुल्य कम करते है.एक तरह से आप घमंडीही है.हम कुछ करने योग्य नही ऐसा शैतान हमे बताता है.इस कारण आप जीवन के सब मौको को गवाते है.

खुदको पसंद न करना मतलब नम्रता ऐसे लगता है लेकिन हकिकत में यह विश्वास और परमेंश्वर के वचन का अस्वीकार है. (**फिलीपियों ४ ः १३**). आप खुदको क्या समझते है यह बहुत महत्वपुर्ण है.

लुका ८० ः३० मे यीशुने ऐसे ही एक दृष्टात्मा लगे व्यक्ती का सामना किया.यीशू ने उसका नाम पुछा और उसने कहा सेना , जो उस व्यक्ती का नाम नही था बल्की उसमे अनेक दृष्टात्माए होने से वह उसकी क्षणिक स्थिती थी.दुख की बात यह है कि

इस व्यक्ती ने इस क्षणिक स्थिती को अपने जीवन हमेशा कि वास्तविकता बनायी.

कइबार हम भी क्षणिक स्थितीयो को हमेशा कि वास्तविकताा बनाने कि ओर झुकते है.एकबार गिरने का मतलब यह नही की आप बारबार गिरेंगे.एकबार हारनेका मतलब यह नही आप हमेशा हारेंगे.हमे परमेश्वर की उस शक्ती पर भरोसा रखना है जो हमेशा हमे विजय की ओर लेके जाती है. **(२ रे कुरिंथ २ ः १४).**

खुदकी नापसंदी परमेश्वर को अप्रसन्न करती है.क्योंकी इसकी शुरवात विश्वास नही बल्की नकारत्मक भावनासे होती है.परमेश्वर कोधीत हुए जब मुसा ने अपने अनउपयुक्त वाणी के बारेंमे शिकायत की. **(निर्गम ४ ः ११ से १२).**

यह बात सच है कि बिना परमेश्वर के हम कुछ नही कर सकते फिर भी उसके व्दारा हम सबकुछ कर सकते है तो आइए हम सिर उठाकर जीवन जिए.

ीदन ः ९..............निंदा करनेवाली जीभ.

नितीवचन १० ः १८

निंदा का अर्थ है कि कोई व्यक्ती का चरित्र, या उसका अच्छा नाम खराब करने के लिए उस व्यक्ती के बारेंमे ईर्ष्या, झुठ या सच वाक्य भी कहना.ज्यादातर राजनीती मे होनेवाले लोग ज्यादा निंदा करते है.फिर भी केवल वोही ऐसी बाते करते है ऐसा नही.कलिसिया में भी ये होता है.कोई भी निंदा करने के परीक्षा में पड सकते है.एक बात पक्की है कि स्वर्ग मे निंदा करनेवाले नही. **(भजनसंहिता १५ ः १ से ३).**

याद किजिए कि क्या आपने किसीका नाम खराब करेन के लिए उसकी निंदा कि ? आपने ऐसा क्यों किया ?

दियुत्रिफेस जो नया नियम कि कलिसिया एक अगुवा था.जिसने आपने आपको एक असुरक्षित स्थिती मे पाया.जब प्रेरित युहन्ना ने कुछ शिक्षको को कलिसिया मे बोलने को कहा तो उसे लगा कि उसका स्थान खतरे में है इसलिए उसने उनको ग्रहण नही किया.युहन्ना को यह उसका स्वभाव अच्छा नही लगा.उसने अपने मित्र गयुस को बताया कि दियुत्रिफेस के बारे मे वो क्या करने वाला है. **(३युहन्ना १ ः १०).**

अपने योग्यता कि असुरक्षितताता.अपना स्थान गवांने का खत्रा या सब के साथ मिलजुलकर रहने की कमी. ये सब बाते कारण हम निंदा करते है.

निंदा करनेवाला व्यक्ती यह साबीत करता है कि उसने परमेश्वर के वचन को स्वीकारा नही है. जैसे.. **(भजनसंहिता ७५ ः ६ से ७)|**

कोई भी परमेश्वर को छोडके मनुष्य को उंचा नही उठा सकता.

यशायाह १४ ः २७

कोई भी परमेश्वर कि योजना कोई भी नही बदल सकता .

परमेश्वर हमे सुरक्षा ओर इनाम देता है इसलिए जब हम निंदा करते है तो हम परमेश्वर के विरूद्ध पपा करते है .

नितीवचन १३ ः ३

दिन ः १० . . . . गपशप मारनेवाली जीभ

नितीवचन १८ ः ८

दुसरो के निजी विषय मे गप्पे मारना एक समय बिताने की लोकप्रिय बात है . लेकिन परमेश्वर कहता है कि यह एक चटपटे खाने के समान है जो चुहो को पकडने वाले पिंजरे में रखते है, जिसे वह टाल नही सकता . अब हम समज सकते कि दुसरोसे बात करने की लालसा हममे क्यों हाती है .

जब हम गप शप मारते है तो हम इमानदार नही होते .

झब हम परमेश्वर को अच्छी लगने वाली बाते करते है तौ हमे लगता है की हम परमेश्वर के समान है . उसने अपनी खुशी के लिए हमे बनाया है . इसलिए अगर किसिके बारे मे बात करने विचार हमारे मन में आता है तो हमे सोचना है कि ऐसा हम क्यों करते है ? क्या अच्छी दोस्ती करने का यही एक तरीका है ?

सच तो यह है कि औरो के गंदे पापो के बीज हम बनते है . अगर हम अपने जीवन और उद्देश की ओर अपना ध्यान लगाएंगे तो हमारे पास ऐसी निरउपयोगी बातो के लिए समय नही रहेगा .

नितीवचन २० ः १९

गप शप से दूर रहने का निर्णय किजिए और सबको जानने दिजिए कि आप उनमे शामिल नही है .

आइए हम निश्चय करे कि हम दुसरो के बारे मे चर्चा करने मे व्यस्त न हो .

भजनसंहिताा १९ ः १४

दिन ः ११ . . . . दुसरो के बातो मे दखल देने वाली जीभ .

२ रा थीस्सुलनी ३ ः ११

दुसरो के बारे मे दखल देना मतलब बिन बुलाए किसी के निजी जीवन मे दखल देना . दुसरो के जीवन मे झांकना "ये कितने मे लिया?" . "आप क्या बात कर रहै थे ?" . "यह क्यों खरीदी किया ?"

प्रश्न पुछनेवाले हर एक जन ऐसे नही होते है . कुछ लोग सच मे दुसरोको मदत करने के लिए पुछताछ करते है . फिर हमे कैसे समझेगा कि हम सही है या गलत ? हमे अपने दिल पुछना है कि मै पुछतााछ क्यों रक रहा हूं ?

नितीवचन २६ ः १७

कुत्तेका कान उसके शरीर का सब से उत्तेजनावाला अंग है . अगर हम उसका कान पकडे तो वो हमे जरूर काटेगा . इसलिए दुसरो के जीवन मे दखल देने से हमे नकारात्मक उत्तर मिल सकताा है .

अगर हम माता पिता या उनके समान है तो हमे कभी पुछताछ करनी भी पडती है . नकारत्मक उत्तर से मत डरिए . लेकिन संवेदनशील और कोमल रहिए .

अगर हम बडे बच्चे है तो हमे सिखने का स्वभाव रखना है .

१ ला पतरस ४ ः १५

याद रखीए , दुसरो के जीवन मे दखल देना पाप है . लेकिन अगर आप दुसरो के जीवन में दखल देना चाहते है तो अपने मकसद को जानकर उसके लिए प्रार्थना किजिए .

किसीने कहा है “ जो लोग अपने जीवन मे व्यस्त है वो ज्यादा सफल होते है क्योंकी उनके प्रतियोगी कम होते है”

इस बारेमें आपके विचार क्या है?

दिन ः १२ . . . . विश्वासघात करनेवाली जीभ .

नितीवचन ११ ः १३

विश्वासघात मतलब किसी व्यक्ती को निजी ओर संवेदनशील बातो इस तरह से फसाना के उसमें उसका नुकसान हो . चुगली के कारण किसी का नुकसान नही होता लेकीन वह व्यक्ती लज्जीत होता है . लेकिन विश्वातघात का मतलब है किसी के गुप्त बातो कों शत्रुओ के सामने गलत उपयोग के लिए प्रगट करना .

यहुदाने यीशूका विश्वासघात आसानीसे किया क्योंकी उसके आने जाने के जगह को वो जानता . **(युहन्ना १८ ः २)** . यीशू के जीवन और आदतो को यहुदा जानता था और उसे यीशू के जीवन मे झाकने की स्वतंत्रता थी . उसका अंत नाश मे हुआ . किसीका विश्वासघात करने से हमारा मुल्य और इमानदारी नही रहती .

क्या आपका किसी के साथ विवाद है ? आपने उसके साथ विश्वासघात किया है ? क्या इस पाप मे आप आज भी है? या आपने पश्चाताप किया है?

दुसरी बात, क्या आपके साथ किसी ने विश्वातघात किया है?आपको कैसा लगा?क्या उस व्यक्ती से आज भी आप कोधीत है?

माफी मांगने को ओर क्षमा करने को सिखना मसीही जीवन की आवश्यक बात है.अगर हम ने ऐसा नही किया तो जीवन मे आगे नही जांएगे और गुलामी मे रहैंगे.

रोमियों ८ ः २८

परमेश्वर हर एक बात भलाई के लिए करते है.

आज ही निर्णय किजिए कि आप एक वफादार जीवन जिएंगे और अगर आपका कोई वफादार दोस्त है तो उसके लिए परमेश्वर को धन्यवाद दे.

दिन ः १३. . . . . .तुच्छ बतानेवाली जीभ.

इफिसियो ४ ः२९

आपके साथ समय बिताने के बाद लोगो को प्रोत्साहन मिलता है या वे निराश हो जाते है?

१ ला थीस्सलुनी ५ ः ११

क्या आपके जीवन मे यह असुरक्षा है कि दुसरो को नीचे गिराने से ही आपको अच्छा लगता है?

हाथोडे का उपयोग तोडने और जोडने दोनो के लि्ए होता है.शब्द भी इसी प्रकार किसी को तोड या जोड सकते है.दुसरो को प्रोत्साहन करने के मार्ग और तरीके ढुंढकर हम इस प्रकार के बातोपर विजय पा सकते है.किसीसे हात मिलाकर एक सकारात्मक प्रोत्साहन और बहुत सारा संवाद से अच्छे संबंध बनते है.ऑफिस या घर मे इस प्रकार बात करने से अच्छे परिणाम और वफादारी बढती है.

आपके पति / पत्नि या बच्चों को बताइए के वे आप के लिए बहुत महत्वपुर्ण है.आपके पत्नि को बताइए कि वह एकही स्त्री आपके जीवन मे है.आपके पति की एक जिम्मेदार व्यक्ती के नाते प्रशंसा किजिए.आपके बच्चोंने कोई काम किया तो उनकी प्रशंसा किजिए.अपने वफादार मित्र को धन्यवाद करे.

परमेश्वर के शब्दोंको याद किजिए "तू मेरे नजर मे अनमोल और प्रशंसनीय हो और मै तुमसे प्रेम करता हूं.

दिन ः १४. . . . . .चिडचिड करने वाली जीभ

भजनसंहिता १ ः १

दाऊदका बडा भाई एलीयाब सच मे एक चिडचिडा व्यक्ती था . दाऊद को युद्ध के लिए भेजा था और परमेश्‍वर का अपमान करने से वो क्रोधीत था . दाऊद अपने परमेश्‍वर मे सुरक्षित था . एलियाब ऐसा नही था . आप **१ ला शमूएल १७ ः२८** मे देख सकते है कि किस प्रकार एलियाब दाऊद पर कोधीत हुआ और उसके आत्मविश्वास और उद्देश को तुच्छ जाना .

चिडचिडा व्यक्ती दुसरो के उद्देश को तुच्छ जान सकता है . ये एक ऐसा जहर है जो चिडचिडा और उसके सामनेवाला दोनो पर असर करता है .

चिडचिडा व्यक्ती कभी अकेला नही होता . उसके आजूबाजू मे बहोत लोग होते है . इससे संबंध पुरी तरहसे बिगडते है . इसमें कुछ दोस्त मिल सकते है लेकीन दोस्ती ज्यादा गहरी नही होती . चिडचिडे व्यक्ती से दोस्ती हमे घातक स्थिती मे ले जाती है .

तो आइए हम दृष्टों के युक्ती पे नही चलेंगे . पापियो के मार्ग मे खडे न होंगे . ठठ्ठा करनेवाले मडली मे न बैठकर धन्य हो जाएंगे .

दिन ः १५ . . . . सब कुछ जाननेवाली जीभ .

नितीवचन १२ ः २३

क्या आप एक ऐसे व्यक्ती है जो बिना पुछे दुसरो को सलाह देते है?क्या आप एक ऐसे व्यक्ती है आपके सुझाव सबसे अच्छे है और दुसरोने वो सुनने चाहिए ऐसा आपको लगता है? क्या आप हमेशा ऐसा शब्द इस्तेमाल करते है “ आपको ऐसा या वैसा करना चाहिए”

नितीवचन १२ ः २३

यदि आपको लगता है कि सलाह देने के लिए आप सहि व्यक्ती है और आपकी राय सबसे बेहतरीन है . तो भी उसे संवेदनशीलता से दिजिए . खुदकी प्रशंसा करके हम अपने मित्र तोड सकते है . (विवाहित स्त्रियो ने याद रखना है कि एक पति अपने पत्नि मे मां को नही ढुंढता .)

हमे क्या करना चाहिए?अगर किसने पुछा तोही सलाह दिजिए . दुसरोंके बीच मत बोलिए . इससे आप आधिक नम्र और धार्मिकतामे प्रौढ बनेंगे .

अगर आप ऐसे व्यक्ती है तो सोचिए कि क्या आपका ज्ञान आप के असुरक्षितता कारण है? क्यो कि आपकी कोई प्रशंसा नही करता या आपकी ओर कोई ध्यान नहै देता तो क्या इसलिए आप उसे ढुंढ रहै है?

जब आप बातचित करते है तो आपके शब्दोको साधरण रखिए,ध्यान लगाकर सुनिए,दुसरो की राय पुछीए और गलतियां

दिखाना छोडिए . आपके दुसरो से निजी संबंध और बढिया हो जाएंगे .

ीदन ः १६ . . . . .कठोर जीभ

नितीवचन१५ ः १

असंयम,निराशा,क्षमता का अभाव,दबाव इन बातो के कारण हम कठोर शब्दोंका इस्तेमाल करते है . कठोरता के कारण सकारत्मक कार्य नही होता . सुलैमान राजा ने कहा कि भली स्त्री के बातो में दया होती है**(नितीवचन ३१ ः २६)**.दुसरोसे करूणा से बातचित करना सफलता का एक प्रमुख साधन है .

ऐसा सोचिए कि आपको कठोर होने का कोई अधिकार नही . क्योंकी परमेश्वर कठोर नही है, वो हमारे पिता है और हमे उनका अनुकरन करना चाहिए . जैसे परमेश्वर हमे अनुग्रह देते है वोही अनुग्रह हमे दुसरो को देना है .

इसका मतलब यह नही कि हमे परिस्थिती और समस्यो के सामने अपना सिर झुकाना है . कुछ समस्या सुलझाने से पहले हमे प्रार्थना के द्वारा योग्य श्‍ब्द मांगना है**(यशायाह ५५ ः ११)**.कठोरता के कारण परमेश्वर के न्याय का कार्य नही होता .

कठोर शब्द न भुलनेवाले और किसी के जीवन पर हमेशा का असर करनेवाले होते है .

समाज से बाहर निकाले गए कई लोगो को एक समय कठोर शब्दोका शिकार होना पडा . यह शायद उनके माता पिता या शिक्षकोंके या उनके नेताओ द्वारा हुआ .

नितीवचन १६ ः ३२

जिसे जल्दी क्रोध नही आता वो महापराक्रमी से बढकर है . याद रखिए एक बार तोडा तो वापस जोडा नही जा सकता . शब्द वापस नही ले जा सकते .

अगर आज कठोरता आपके चरित्र मे है तो परमेश्वर के पास जाकर पवित्र आत्मा और वचनोद्वारा बदलने का मार्ग ढुंढीए .

दिन ः १७ . . . . .अकुशल जीभ .

कुलुसियो ४ ः ६

दानिएल और उसके तीन मित्र बडे मुसिबत मे थे . बाबुल का राजा नबुकदनेस्सर उनके देश को जितकर उन्हें बंदी बनाकर लाया . राजाने राज्य मे सेवा करने के लिए कुछ ज्ञानी और सुंदर पुरषोंको प्रशिक्षण के लिए चुना . समस्या यह थी कि राजभवन का अन्न इन यहुदी लोगो के नियमो के अनुसार नही था . दानिएल ने किस प्रकार चतुराई से बिना विरोध किए इस समस्या को सुलझाया . **(दानिएल १ ः ८)**

दानिएल के संकल्प थे कि राजभवन का अपवित्र अन्न नही खाना है. उसने चतुराई से बिना मदीरा वाला शाकाहारी खाना खाने की अनुमती ली.

दानिएल को परमेश्वर कि पसंदी मिली वह सफल हुआ और वह राजा का एक मुख्य अधिकारी बना और उसकी समस्याका हमेशा के लिए समाधान हुआ.

चतुरता से हमेशा हमे ज्यादा फायदा होता है.

शिष्य होने के नात हमे हमेशा इमानदार रहना है और उसमे कोई भी समझौता नही करना है. लेकिन इसका अर्थ यह नही की हम कुछ भी बोले. एक महत्वपुर्ण कुशलता हमे सिखनी है और वो यह है कि कठीण और अनिश्चीत परिस्थीती का चतुराई से सामना करना.

क्योंकी कई सच्चाईयां कुर और दर्दनाक होती है**(अय्युब ६ ः २५)**.भावनिक सामर्थ्य़ , खुदका स्थान और आगे बढने की इच्छा इन सब बातोपर निर्भर रहता है कि एक व्यक्ती सच्चाई का सामना करते हुए कितने पिडा से जाएगा. इसलिए चतुराई अलग अलग लोगो पर और परिस्थीतीयोंपर निर्भर है.

युहन्ना १ ः१७

यीशूने अनुग्रह दिखाते हुए सच्चाई बताना कभी नही छोडा. जानबुझकर चतुराई की तो वो अधार्मिकता है. वो हम गुस्सेसे,निराशासे या बदला लेने के भावना से करते है.

बोलने से पहले दो बार सोचिए और परमेश्वर आपको मार्गदर्शन करेगा.

ीदन ः १८ . . . . .डराने वाली जीभ.

१ ला शमुएल १७ ः ४४

दाऊदको मारना मतलब एक केक के तुकडे के समान है ऐसे गोलियात को लगा. इसलिए उसके जुबान से ऐसे शब्द यूंही निकले. डरानेवाला व्यक्ती गोलियात के जैसा होता है. नाम को ललकारना,धमकाना,निचा दिखाना . परंतु दाऊद कि प्रतिकीया अलग थी . उसने आपने शत्रुको सामने आपने परमेश्वर पर विश्वास दिखाया.

१ ले शमुएल १७ ः ४५ से ४६

डराने वाले शब्द सामनेवाले व्यक्ती को डराने के लिए और असुरक्षित करने के लिए होते है. चिल्लाना उसमें का एक भाग है. अगर हमने सिर्फ परमेश्वर का ही भय माना तो हमे कोई नही डरा सकता.

परमेश्वरने हमे दबाव डालने या अधिकार चलाने को कभी नही बताते. अदन बागमें परमेश्वर ने आदम और हवा को एकदुसरे ऊपर नही बल्की मछलीया,पक्षी और सभी प्राणियोंपर अधिकार दिया**(उत्पत्ती १ ः २८)**

डरावने बोलने से किसीके ऊपर घातक शारीरीक और मानसिक परिणाम हो सकता है .जैसे सरदर्द,चिंता,निराशा,निद्रानाश,दबाव,थकान,आत्मविश्वास का अभाव,थकावट .इसप्रकार परमेश्वर की संतानो ने एकदुसरोसे बर्ताव नही करना है .डरावने बोलने से ऑफिस या घर में या व्यक्ती के संबधोमे विद्रोह आता है .

अगर ऐसी बात करने की हमे आदत है तो सोचिए कि क्या आप दुसरो के ऊपर नियंत्रण करना चाहते है?जो लोग नकारात्मक और अव्यस्थित वातावरण में बढते है वे ऐसे रहते है .या इसका मतलब अपने गहरे असुरक्षितपण या पापो के ऊपर पर्दा डालना .ऐसे चिजो को हमारे जीवन से बाहर निकालना है .

दिन ः १९ .असभ्य जीभ

यशायाह ३५ ः ८

सोचिए की अगर हमारी सडके अच्छे,सभ्य चालको से भरी हो .गालिया नही,चिल्लाना नही,गैरवर्तन या धमकाना नही!

एक व्यक्ती असभ्य क्यों होता है? क्यों हमारे पास ज्यादा समय नही है?बहोत सारा काम और बहोत कम समय?संयम कि कमी?जीवन कि अपेक्षाए . .काम के बॉस,पत्नि या बच्चे और अन्य लोग?शिक्षा कि कमी?बिघडे बच्चे?हर दिन का जीवन के दवाब?

संयम बहोत कम दिखाया जाता है .गलत आदते,अशिष्ट बातचित आजकल जीवन अंग हो गए है .किसीके साथ असभ्य बर्ताव उसका पूरा दिन खराब कर सकता है .

सुनहरे नियम को हम कईबार भुलते है**(लुका ६ ः ३१)** क्यों कि लोगो के पास दुसरो के बारेंमे सोचनेका समय नही है .लोग अपने आप मे बहोत खो चुके है .हम देखते है कि लोग भीड वाली जगह मे भी इतनी उंची आवाज में मोबाइल पर बाते करते है और दुसरो को परेशान करते है .कलिसिया की सभा में या कोई भी महत्वपूर्ण सभा मे भी मोबाइल पर बांते करते है .

१ ले कुरिंथ १३ ः ४ से ५

हमारा परमेश्वर के लिए प्रेम और उसको दुसरो के सामने प्रस्तुत करना हमारे हर दिन के जीवन पर प्रभाव डालता है .

आपको कैसा लगेगा अगर कोई आपके साथ असभ्य हो?

आप इतने भी अच्छे मत बनीए कि हर एक बात सुनले .आप लोगो उनकी असभ्यता के बारेमे बताइए लेकिन संवेदनशीलतासे "क्या आप का दिन खराब था?" यह एक कोमल सवाल है जो आप पुछ सकते है उनसे जो असभ्य होते है .लोगो कि आदत है इसलिए उनको वैसा बर्ताव करने मत दिजिए .और आप उनके जैसा असभ्य न हो इसका ध्यान रखिए .

बदला लेना परमेश्वर के हात में है .

ीदन ः २० . . . . न्याय करनेवाली जीभ .

मत्ती ७ ः १ से २

न्याय करनेवाले फरिसियो को यीशू का सामना करना पडा . यीशू के हर एक बात मे और कार्य मे वे आड आ रहै थे . देखिए यीशू कि प्रतिक्रिया क्या थी .

युहन्ना ८ ः १५ से १६

न्याय करनेवाले लोग दुसरो के दोष निकालने में व्यस्त रहते है . केवल इसलिए के दुसरे लोग जो करना चाहिए वो नही करते हम हमारे उद्देश से उनके कामो का न्याय करते है .

अगर हम किसी को आरामसे और धीरे से चलते हुए देखते है तो हम उसे आलसी कहते है . क्योंकी हम सिर्फ आपने ही मार्ग को जानते है .

दुसरे लोग अलग हो सकते है . किसी विषय में हमारे जो विचार है वो दुसरो के भी हो ऐसा नही होता . कईबार हम सिर्फ कुछ कहीसुनी सुनते है और न्याय करते है .

मत्ती ७ ः ३ से ५

यीशू का न्याय परमेरश्वर के वचन के स्तर के अनुसार था . अन्य बातो से नही था . परमेश्वर के स्तए से ही हम धार्मिकता से न्याय कर सकते है . हम दुसरो का न्याय अच्छी तरह से कर सकते है अगर हम खुद वैसा जीवन बिताए . जो परमेश्वर के स्तर से जीवन नही बिता रहै है उनके लिए प्रार्थना किजिए . उनको उनके बर्ताव के बारे मे मदत करने के उद्देश से समजाइए .

ीदन ः २१ . . . . खुद मे खोई हुइ जीभ

फिलिपीयो २ ः ४

हामान, एक पर्शिया राज्य का अधिकारी जो एस्तेर के किताब मे है, इस प्रकार के जीभ का उदाहरण है**(एस्तेर ५ ः ११)** . ऐसा लगता है पुरी दुनिया उसीके के अर्दगिर्द है . उसका बडा धन,उसके लडके बाले,उसके बडे संबंध,राजा के सामने उसका स्थान . अपने बारे मे बाते करने मे वो कभी थका नही .

आपके दुसरो के साथ बातचित मे क्या विषय होता है?

आपको कैसा लगेगा एक ऐसे व्यक्ती साथ बात करने के लिए जो हमेशा अपनी ही समस्याओ के बारे मे बात करता है? हमेशा अपने बारे मे बात करने वाले के ज्यादा निकट जाना मतलब साही (एक जानवर जिसके पुरे शरीर पर काटे होते है) को गले लगाना .

कभी कभी हम संगती करते समय कोई अतिमहत्वपूर्ण व्यक्ती ढुंढने का विचार करते है . इसलिए संगती करते समय भी हमारी

आंखे इधर उधर जाती है. अगर हम आपना पूरा ध्यान लगांएंगे तो हमारी संगती अर्थपूर्ण और सुंदर होगी.

आपने बारे मे हमेशा बात करने वाले व्यक्ती को अगर आप सिखाना चाहते है तो बडे धीरज से सिखाइए क्योंकि इस स्वभाव बदलने को बहोत समय लगता है. अगर आप इस स्वभाव मे संर्घष कर रहै है तो स्वर्गीय चरवाह से मदत लिजिए तो आपकी जरूरत पूरी होगी. पुरे ध्यान से गहरे संबंध बनाने

के प्रयत्न किजिए.

दिन ः २२ . . . . श्राप देने वाली जीभ.

याकुब ३ ः १०

क्या आपने कभी यह सोचा है कि आपके मुह से अप्रशंसनीय शब्द क्यो निकले है या आपके जुबान पर क्यों आते है?जैसे किसीने जो गलत शब्द इस्तेमाल करता है अपने सफाई मे कहा “ये शब्द पवित्र शास्त्र मे है”. अगर आप भी ऐसे है तो आप पवित्र आत्मा को आपकी जीभ पर नियंत्रण करने नही दे रहै है.

याकुब ३ ः ८ से ९

अनारदयुक्त,अश्लील या अशिष्ट शब्दों मे बात करना परमेश्वर की संतान को शोभा नही देता. अपनी निराशा और गुस्सा प्रगट करने के लिए लोग भ्रष्ट और अप्रशंसनीय शब्दो का प्रयोग करते है,क्योंकी वे सोचते है कि धार्मिक शब्द उतने सूचक नही होते. क्या आप गलत शब्द मन मे बोलते है? जैसे एडियो को पटकना,किमती चीजे तोडना,किताबो को फेकना,पानी छिडकना,जलाना या हात उठाना? ये आपके मुह से नही निकलेगा लेकिन आपके जुबान पर जरूर है.

लुका ६ ः ४५

शब्द हमारे जीभ से नही बल्की हमारे दिल से फिसलते है. हमे उपवास और प्रार्थना मे परमेश्वर के जाकर इस बराई को नियंत्रण में लाना है.

याद रखिए कि शब्द मौखिक विचार है. वे अचानक नही निकलते बल्की हम ही उनका पालन पोषण करते है.

दिन ः २३

कुडकुडाहट करनेवाली जीभ.

सलोफाद के पाच बेटियों को समस्या थी. वचन दिए हुए देश में पहुंचनेसे पहले उनके पिता कि मौत हुई. जमिन का वारिस

बनने के लिए सलोफाद का कोई बेटा नही था.नियम के अनुसार ये हक्क बेटि को नही मिलता था.इसलिए ये बहने जिनके भाई,पिता,पति या बेटा या काई भी पुरूष नही था समस्या मे थी.उन्होने क्या किया?मुसा और नियमशास्त्र के विरूद्ध सबके पास जाकर शिकायत कि?(गिनती २७).नही, इन बहनोने सही व्यक्ती पास जाकर अपनी समस्या बताई.और इसका यह हल निकला कि मुसा ने ये समस्या परमश्वर को बताई और उसका सही समाधान बताया.

क्या होता अगर उन्होने मुसा और व्यवस्था के खिलाफ शिकायत या कुडकुडाहट कि होती?शायद वे अपने जीवन को भी खो सकते थे.

कोई समस्या को सही व्यक्ती पास जाकर सुलझाइ जा सकती है.कई लोग ऐसा नही करते वरन अपनी समस्या को जाकर अनेक लोगो अनावश्यक बता देते है.यह एक अधार्मिक बात है.भजनसंहिताकार अपनी समस्याओ को उसके पास लेके जाता है जो उसका समाधान करता है और वो है परमेश्वर.

क्या आपको कुडकुडाहट करने वालो कि संगती रहने का मन करता है ताकि आप अकेले न रहै?जैसे कुछ स्त्रिया एक साथ बैठकर अपने पति के बारे मे कुडकुडाते है? या पति भी ऐसा करते है?हम जिम्मेदार है दो चीजे करने के लिए जो कुडकुडाता है..एक है कि समस्या का समाधान करके उस व्यक्ती कि मदत करना और दुसरी यह कि उस व्यक्ती को सिक्के कि दुसरी बाजू भी दिखाना.

दिन ः २४.................बदला लेनेवाली जीभ

१ ला पतरस ३ ः ९

मौखिक बदला लेने जैसी आसान बात कोई नही.उसका आनंद थोडे समय के लिए होता है .लेकिन उससे होने वाला पछतावा लंबे समय तक रहता है.शैतान हमारे सामने बदला लेने के लिए हर तरह से स्थिती उत्पन्न करता है.

बदला लेने का मुल अर्थ है सजा कि वापसी करना.

रोमियो १२ ः १७ से १९

अगर मै बदला लेना चाहता हूं तो मै पवित्र आत्मा के उस आग्रह को अस्वीकार करता हूं जो मुझे परमश्वर के अनुशासन के प्रति अधिन होने को बताता है और मै परमश्वर के अधिकार के खिलाफ विद्रोह करता हूं.

अगर हम यह सोचे कि यीशू क्या करते अगर वो उस स्थिती मे होते जिस मे आज मै हूं,तो हम इस पाप मे बदल सकते है.जैसे कि हमे यीशू का अनुकरन करने और उनमे बढने के लिए बुलाया गया है.तो आइए हम उसके कदम पर चले और सर उठाकर जिए.

दिन ः २५ . . . . .प्रकाशितवाक्य १२ ः १0

अय्युब के लिए अनुसार कुछ भी नही हो रहा था.उसने अपने बच्चो को खोया,उसकी सेहत और उसकी संपत्ती.और पिडा कम थी कि उसके दोस्तो ने भी उसके के उपर घमंडी,ईर्ष्या और अन्य चरित्र होने के आरोप लगाए**(अय्युब २२)**.वे उसका सांत्वन करने आए थे फिर भी वे उसके मुसिबतो का कारण जानना चाहते थे. अय्युब को पता की वो इमानदार है.

इन गलत आरोपो को झेलना और भी पिडादायी था.

क्या आपने कभी किसीका गुनाह साबीत होने से पहले ही उसपर गलत आरोप लगाए है?अगर हम ऐसा करते है तो हम शैतान के जैसा ही करते है जो परमेश्वर के संतान को दोष लगाने वाला है.देखिए कि परमेश्वर ने अदन बाग मे किस प्रकार आदम और हवा का सामना किया जिन्होने आज्ञा तोडी थी.परमेश्वर उन्हे आसानी से कह सकते थे “हे कृतघ्न पापियो,आपने आज्ञा तोडने का साहस कैसा किया?.मैने आपपर भरोसा नही करना चाहिए था”

उत्पत्ती ३ ः ९ से ११

परमेश्वर को पता था कि वे लोग क्या जवाब देने वाले है.इसके बावजूद परमेश्वर ने आदम को बोलने का मौका दिया.सही स्पष्ट प्रश्न पुछंना और प्रतिक्रिया को सुनना आरोप लगानेवाली जीभ पर बदलने का प्रभावी उपाय है.पुछीए और सुनीए.

अगर आपपर कोई आरोप करते है हो सबसे बेहतरीन बात है कि परमश्वर के पास जाना.अगर आरोप लगाने से आपको चोट पहुची है तो आप उसे बताइए कि यह सच नही है.झुठ बोलने के तरिके ढुंठने मे अपनी ताकत मत गवाइए.क्यों कि झुठ का स्त्रोत शैतान है.परमेश्वर आपकी ओर से है और वो हमेशा बडिया कार्य करेंगे.

ीदन ः २६ . . . . .निराश करनेवाली जीभ

अय्युब २९ ः २४

बहोत सारे लोग अपने लक्ष तक पहुंच नही पाते क्योंकी किसीने निराशा से भरे हुए शब्द निकाले.शिक्षकोने जिनको कम अंक मिले उन विद्यार्थियो के सपनो ध्वंस कर दिया, परिवार ने उनके लक्ष से दूर कर दिया, या काम पर निराशा पाना इ.किसेके योजना पे रोक लगाकर क्या आपने कभी उनकी आशा,आत्मविश्वास ओर जोश को उदास किया है?यह तब होता है जब हम परमेश्वर जो हमारे विचारो आर मांग से बढकर कार्य कर सकते है भरोसा नही करते**(इफिसियो ३ ः २0)**

सोचिए कि कैसे एक निराशा कि खबर ने इस्त्राएल लोगो पर मुसीबत लायी.जब वो वचन दिए हुए देश मे पहुंचनेवाले थे.मुसा ने १२ लोगो को देश का भेद जानने को भेजा.उन्होने वहां सबकुछ बहुतयात में देखा.सिर्फ दो लोग अच्छी बातो की खबर लायी.उन्होने वहा बाधाए और मजबूत मनूष्य भी देखे.लेकिन वापस आकर कालेब और यहोशु ने इस्त्राएल लोगो आगे बढकर युद्ध करके उस देश हासिल करने का प्रोत्साहन दिया.लेकिन दस लोग इस के लिए जोशिला नही थे.

गिनती १३ ः ३१ से ३३

परमेश्वर के सारे प्रयत्न और चमत्कारो के बावजूद बहोत लोगो ने इस निराशा कि खबर पर विश्वास किया(**गिनती १४ ः ३६ से ३८**).सिर्फ यही नही परमेश्वर ने सारी मंडली को ४0 साल के लिए जंगल मे भटकाया . अगर १0 दस लोगो ने भी सबको प्रोत्साहन दिया होता तो ये नही होता था .

इस का मतलब यह नही कि दिन मे सपने देखने वालो को आप प्रश्न नही करना है . लेकिन सोचिए कि किसी के प्रोत्साहन करने से आपके जीवन मे जादुई उत्साह आया था .

आज के इस नकारात्मकम संसार मे समय समय पर सबको प्रोत्साहन कि जरूरत है . अगर आपको कोई निराश कर रहै है तो आपकी जिम्मेदारी है कि आप उस व्यक्ती बताए कि आपकी आंखे परमेश्वर टिकी है .

ीदन ः २७ . . . . शंका या संदेह करने वाली जीभ

मरकुस ११ ः २३

दुसरो की समस्याओ को सुलझाने मे हम आत्मविश्वास दिखाते है लेकिन जब हमारी बारी आती तो हम अपने आपको दंड देते है . हम सबको यह विश्वास दिला सकते है कि “सब कुछ ठिक हो जाएगा” . लेकिन वही बात आपने आपसे कहना आसान नही होता . अगर हम संदेह करने वाले स्वभाव मे बदलना चाहते तो हमे परमेश्वर ने दिए हुए वादो पर भरोसा करना है . सिर्फ यही नही लेकिन हमारी मुह से वो प्रगट भी करना है . विश्वास सुनने से होता है(**रोमियो १0 ः १७**).जितना हम अविश्वास के बारे मे बात करेंगे उतना हम ज्यादा अविश्वासी हो जाएंगे . लेकिन जितना ज्यादा हमारा विश्वास प्रगट करते है उतना विश्वास बढता है .

संदेह के शब्द अविश्वासी हृदय से निकलते है . जब हम अपने आप पर भरोसा रखने ल्एगते है तो शंकाओ की शुरूवात होती है .

नितीवचन २८ ः २६

यह वचन कहता है कि जो अपने आप भरोसा करता है वो मुर्ख है .

अगर आपके जीवन के किसी क्षेत्र मे आपको शंकाए है तो आप परमेश्वर वचनो के पास जाइए और परमेश्वर के दिए हुए वादो से शंकाओ पर विजय पाइए . वचनो को पढिए,याद किजिए,बार बार पढिए ताकि वे वचन आपके जीवन के संकल्प बन जाए .

परमेश्वर कि संतान उसके उपर के विश्वास से जीते है . संदेही थोमा के जैसा मत बनिए जैसे सिर्फ अपने आखोदेखी और छुकर देखी पर भरोसा किया(**युहन्ना २0 ः २५**).इससे परमेश्वर प्रसन्न नही होते .

ी

दन ः २८ . . . . वाचाल या बकवादी जीभ

नितीवचन १० ः १९

क्या आप किसी को जानते है जिसे बोलने का अतिसार है? बडबड चलती ही रहती है, एक विषय से लेकर दुसरे विषय तक? इस प्रकार जीभ को वाचाल या बकवादी जीभ कहते है या दुसरे शब्दो मे बडबड करनेवाली जीभ . ऐसा कहते है कि स्त्रियोकी बात रूकती नही लेकिन कुछ पुरूष भी ऐसे होते है .

इसका मतलब यह नही कि सबको एक “शांत भेड” बनना है,लेकिन शांत रहना सिखना है .

१ ला थेस्सलुनी ४ ः ११

अगर आपके पास लोगो का धान खिंचकर उनसे बात करने का दान है तो परमेश्वर और उनके वचन के भांडार के बारे मे बात किजिए . इससे कई लो धार्मिकता की ओर मुडेंगे .

शायद आप कम बात करने वाले स्त्री या पुरूष है फिर भी जब परमेश्वर बारे बात करना है तो आपको भी ज्यादा बात करना है .

दिन ः २९ . . . . अविवेकी जीभ

नितीवचन २ ः ११

बढे बाढ जिसने पृथ्वी का अधिकतर नाश किया खत्म होने के बाद,नोहाने एक अंगूर कि बाग लगायी . एक दिन वह दाखरस पिकर नंगा ही पडा था . जब उसके बेटे हाम ने उसे तंबू मे ऐसे देखा,उसने जाकर अपने दोनो भाईयो ये बताया**(उत्पत्ती ९ ः २२)**.इन दोनो बेटो शेम और याफेत ने कपडे लेकर पिछे कि ओर चलते हुए अपने पिता की नग्नता को झांका . उन्होने उसे देखा नही . यह करना उनके समंजस स्वभाव का उदाहरण था .

समंजस व्यक्ती अपने बातचीत और स्वभाव मे बुद्धीमानी और स्वंय के उपर का अनुशासन दिखाता है .

हाम का अविचारी स्वभाव उसे महंगा पडा . बादमे जब हाम ने क्या किया यह नोहा को पता चला तो उसने उसे श्राप दिया .

यह एक समंजस बात नही कि दुसरो के गुप्त बाते जो हम जानते है सबको जाके बताना . बल्की हमे उस मामले को निपटना है .

कलिसिया हम बहो करीबी संबंधोमे जीवन जीते है . आप किसी अगुवे या शिष्य के जीवन के सच्चाई को देखते होंगे . याद रखिए परमेश्वर ने आप को वहा कुछ मकसद से रखा है . वो चाहता कि आप वो करे जो नाथान दाऊद के साथ किया**(२ रा शमुएल १२)**.सब लोगो के सामने अपने पापो को बताना मसीह कि कलिसिया को चोट पहुंचा सकता है .

अगूवे को अनुशासन करने का जिम्मेदारी परमेश्वर कि है,यही बात अन्य शिष्यो के साथ भी है.

दिन ः ३०....................चुप रहनेवाली जीभ

नितीवचन २ ः ११

सभोपदशक ३ ः १ से ७

पिछले सारे अध्यायो को पढने के बाद शायद हमे यह अगर मुझे अपने जीभ को नियंत्रण मे रखाना है तो मुझे सिर्फ कुछ शब्दोसे ही जीवन जीना है. संबंध बनाए रखने के लिए बातचित आवश्यक है. जैसे ऑक्सीजन का कार्य शरीर मे है वैसे ही बातचित से संबंधो मे होता है. आज तक के सभी अध्यायोमे हमने सिखा कि अलग अलग प्रकार के नकारात्मक संभाषण का कोई मुल्य नही है. इसी प्रकार गलत रिती से चुप रहना को भी मुल्य नही.

बदला लेने के लिए चुप रहना सही नही. जैसे कोई स्थिती मे गुस्सा या नापसंदी प्रगट न करना. चुप रहना यहांपर समाधान नही है. लेकिन उसका सामना करना.

देखिए **मत्ती १८ ः १५...**

अगर बात करने के स्थिती मे चुप रहने से जो व्यक्ती हमारे विरूद्ध अपराध करता है उसके प्रती नकारात्मक भावना उत्पन्न होती है. हो सकता है की वो व्यक्ती और अपराध करके दर्द बढाए.

अगर कोई हमे निंदा या दोष लगाने के पाप मे भाग लेने को कहे. संबंध तुटने के डर से हमे उसकी कोई बात सुनकर कोई भी बात मे सहमत नही होना है.

चुप रहना उचित नही अगर हम किसी को गढे में गिरते देखकर भी उसे बचाने के लिए कुछ न कहे. चुप रहना कईबार सहमती का प्रतिक होता है. **(गिनती ३० ः ३ से ५)**

एक जापानी कहावत है " शांत किडा दीवार मे छेद करता है". जहां बात करना है वहां चप रहना मतलब अपने संबंधो को छेद देना.

आपके व्यक्तीगत निरीक्षण और निर्णय

___

___

___

___

___

<u>हरदिन जीभ की जांच करने के लिए सूचि</u>

१. क्या मै किसी भी झुठ मे शामिल हुआ?

२.क्या मैने किसीकी झुठी प्रशंसा की?

३. क्या मैने किसी के साथ चालाकी की?

४. क्या मनै किसी के साथ उतावला होकर बात की?

५.क्या मेरे शब्दोंसे मैने किसी में फुट डाली?

६. क्या मैने विवाद या झगडा किया?

७.क्या मैने घंमंड किया?

८.क्या मैने आपने आप को तुच्छ जाना?

९. क्या आज मैने किसी की निंदा की?

१0. क्या मैने किसी कि चापलुसी की?

११. क्या मैने दुसरो के बातो मे झाकने कि कोशिश की?

१२. क्या मैने किसीका विश्वासघात किया?

१३. क्या मैने किसी के बारे मे गंदी बात की?

१४. क्या मैने चिडचिडा स्वभाव रखा?

१५. क्या मैने, मुझे सब पता है ऐसी बातचित की?

१६. क्या मैने कठोर शब्दोंका इस्तेमाल किया?

१७. क्या मेरे बोलने मे चतुराइ दिखायी?

१८. क्या मैने डरावने शब्द इस्तेमाल किया?

१९. क्या मैने असभ्य बर्ताव किया?

२०. क्या मैने किसी का न्याय किया?

२१. क्या मै आपने पाप मे डुबा था?

२२. क्या मैने अपवित्र शब्दोंका प्रयोग किया?

२३. क्या मैने किसी की शिकायत की?

२४. क्या मैने किसी का बदला लिया?

२५. क्या मैने किसी पर आरोप लगाए?

२६. क्या मैने किसी को निराश किया?

२७. क्या मैने अविश्वास और संदेह प्रगट किया?

२८. क्या मैने ज्यादा बात किया?

२९. क्या मैने असंमंजस बात की?

३०. क्या मै चुप रहा जहां बात करनी चाहिए थी?